मंथन

अखिल भारतीय तत्त्वज्ञान परिषद

२०१८

मंथन

:: संपादक मंडळ ::

डॉ. सुरेंन्द्र गायधने

डॉ.सुनील साळुंके

डॉ.सुनीता इंगळे

डॉ.प्रभाकर किर्तनकार

डॉ.अतुल महाजन

अखिल भारतीय तत्त्वज्ञान परिषद

२०१८

• मंथन - डॉ. सुरेंन्द्र गायधने (मुख्य संपादक)
Manthan-Dr.Surendra Gaidhane(Chief Editor)
• प्रथमावृत्ती - नोव्हेंबर,२०१८.
©अखिल भारतीय तत्त्वज्ञान परिषद
• प्रकाशक:व्यंकटराव मोरे
मैत्री प्रकाशन,
सिद्धेश्वर रोड, देशपांडे गल्ली,
लातूर-४१३५१२
मो. 9850740367/8329351614
• मुद्रणस्थळ : रुद्रायणी ऑफसेट, औरंगाबाद.
• पृष्ठ जुळणी : डॉ.संगीता मोरे
• पृष्ठ संख्या : 172
• स्वागत मूल्य : ₹.200/-
• ISBN:978-93-84810-43-6

अनुक्रमणिका

01.The ancient Indian values: Their applicability in 21st century
-Dr.Vijay Srinath Kanchi ...07

02.Significance of Philosophy in the Global Scenario
-Dr.Sharmila Virkar ...14

03.Unlearning the 'I' to prevent Conflicts and Chaos.
-Dhanshree Patrikar. ...17

04.Environmental ethics -Yerule Shital Rudramani ...22

05.विकासवाद एवं परमाणुवाद तथा आधुनिक विज्ञान
- डॉ.सुनील वसंतराव सालुंके ...26

06.भ्रूणहत्याः एक दार्शनिक विमर्श -प्रा. वैशाली माधवराव दिवे ...31

07.तत्त्वज्ञ कोण आहे ? - डॉ.सुरेन्द्र गायधने ...36

08.तत्त्वज्ञान समकालीन मुलभूत तथ्यांमध्ये बसते का? : प्रो. जॉन सर्ल
- डॉ.हरीश नवले ...40

09.वर्तमान जागतिक परिदृश्यात तत्त्वज्ञानाची सार्थकता
- डॉ.विजय शेडगे ...45

10.ईश्वर : धर्माचा की तत्त्वज्ञानाचा ? -उमेश उईके ...49

11.वर्तमान जागतिक परिदृश्यात धार्मिक तत्वज्ञानाची उपयुक्तता
- .डॉ.नरवाडे बालाजी ...53

12.वर्तमान जागतिक परिदृश्यात राजकीय नीतिशास्त्राची सार्थकता
- डॉ. मुबीन शेख ...56

13.भ्रष्टाचार निर्मुलनात नैतिक तत्त्वज्ञानाची उपयुक्तता
- डॉ. प्रभाकर रामलिंग किर्तनकार ...60

14.जागतिक दहशतवाद निर्मुलनात तत्त्वज्ञानाची उपयुक्तता
- डॉ.अनिल लक्ष्मणराव शिंदे ...62

15.मुल्यशिक्षण आणि सर्वांगीण विकास - डॉ.आंबटकर वृषाली ओंकार ...65

16.तत्वज्ञानाचा इतर क्षेत्राशी संबंध
- प्रा. लझडे धनराज तुकाराम ...70

5.

विकासवाद एवं परमाणुवाद तथा आधुनिक विज्ञान

– डॉ.सुनील वसंतराव सालुंके

अध्ययन का उद्देश :

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत हमें केवल विकासवाद तथा परमाणुवाद के सृष्टिनिर्माण विषयक मतों का विचारविमर्श तथा तुलना करना है। सांख्य दर्शन का विकासवाद (उत्क्रांतिवाद) तथा वैशेषिक दर्शन का परमाणुवाद इन दोनों विचारों का तुलनात्मक अध्ययन कर कौनसा मत अधिक स्वीकार करने योग्य है, अथवा इन दोनों मतों का समन्वय करना संभव है क्या? यह देखना प्रमुख उद्देश है। साथ ही इन दोनों दर्शनों के मतों के तुलना आधुनिक विज्ञान के सृष्टि निर्माण के मतों से करना यह भी उद्देश्य है।

सांख्य, एवं वैशेषिक दर्शन का जगत की सृष्टि विषयक विचार प्राचीनतम माना जाता है। वर्तमान युग में निसर्ग विज्ञान में भी ऐसा विचार आज तक किया जा रहा है। परंतु इस संदर्भ में आज तक कुछ निश्चित निष्कर्ष प्राप्त नही है। इसलिए दार्शनिक विचारोंका विज्ञान में स्वीकार अथवा वैज्ञानिक अध्ययन के निष्कर्ष स्वरुप कुछ अन्य समन्वयात्मक निष्कर्ष निकालना संभव हो सकता है।

सृष्टी निर्माण का तत्त्व द्रव्य (Substance) को माना जाता है। इसी द्रव्य का अध्ययन दर्शन की जिस शाखा में किया जाता है उसे अतिभौतिकीय शास्त्र (Metaphysics) कहा जाता है।

वर्तमान संदर्भ में तत्त्वमिमांसा दर्शन की ऐसी शाखा है की जो सृष्टी का प्रारंभिक तत्त्व (Original Stuff) अथवा आदि कारण (First

दर्शन का मुख्य कार्य है किसी भी विषय के संदर्भ में चिंतन करना तथा उसी विषय के संदर्भ में कुछ अवधारणाएँ निर्माण करना। विज्ञान का कार्य है उन्ही अवधारणाओं को प्रत्यक्ष अनुभव अथवा प्रयोग के आधारपर प्रमाणित करना। वर्तमान में विज्ञान के बहोत से सिध्दान्त ऐसे है जिनकी अवधारणाएँ हमें विभिन्न दर्शनों से प्राप्त होती है। सृष्टि निर्माण विषय में आधुनिक विज्ञान का मत सांख्य तथा वैशेषिक दर्शन के सृष्टि निर्माण विषयक मतों का समन्वय है।

●●●

"पूर्व प्रस्थापित दिशेनेच वाटचाल करावयाची की आपल्या वाटचालीने नव्या दिशेची निर्मिती करावयाची हे जाणणारा माणुस ख-या अर्थाने तत्त्वज्ञ असतो."

ISBN
978 93 84810 43 6